B-4
L-23

सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन की प्रकृति

- 19वीं सदी में भारत के अलग-अलग भागों में अलग-अलग धर्मों में, भिन्न-भिन्न दशकों में सुधार आन्दोलन की शुरूआत हुई। जैसे हिन्दू धर्म में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज इत्यादि के द्वारा सुधारों के लिए किया गया प्रयास।
- सुधार आन्दोलन की दो धाराएँ थीं - सुधारवादी एवं पुनरुत्थानवादी।
- अधिकांशतः सुधारकों का लक्ष्य था सामाजिक धार्मिक कुरीतियों को दूर कर एक आधुनिक समाज का विकास, आधुनिक विचारों का प्रसार और अप्रत्यक्ष तौर पर एक ऐसे समाज का निर्माण करना जो ब्रिटिश विरोधी संघर्ष को व्यवस्थित तरीके से आगे ले जाए।
- सुधारकों ने संगठित तरीके से सुधारों के लिए पहल की जैसे एक निश्चित लक्ष्य और कार्यक्रम को लेकर, सुधार संस्थाओं के माध्यम से तथा लोकतांत्रिक तरीके से सुधार।
- सामाजिक कार्यक्रम के अन्तर्गत अशिक्षा एवं महिलाओं की दशा में सुधार पर सर्वाधिक बल दिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- धार्मिक क्षेत्र में पुरोहितवाद, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड इत्यादि का सर्वाधिक विरोध किया।
- धर्म सुधार पर इसलिए भी बल दिया, क्योंकि सामाजिक कुरीतियों को धार्मिक मान्यता प्राप्त थी।
- धर्म के क्षेत्र में धार्मिक सार्वभौमवाद (विश्व के सभी धर्म सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।) एवं धार्मिक सहिष्णुता पर भी बल दिया।
- सामाजिक धार्मिक सुधारों के लिए तर्क बुद्धिवाद या वैज्ञानिक चिंतन को भी महत्व दिया गया।
- सुधारों के लिए लोकतांत्रिक तरीके अपनाए गए जैसे प्रेस का उपयोग, वाद-विवाद, शिक्षा को माध्यम बनाना, कानूनों को माध्यम बनाना, सेवा भाव, सुधारकों के द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करना।
- सुधार आन्दोलन का संचालन मुख्यतः मध्य वर्ग के लोगों ने किया। हालांकि सुधारों का सम्बन्ध समाज के सभी वर्गों से था।
- सुधारकों की गतिविधियाँ मुख्यतः शहरों में केन्द्रित थीं। अधिकांशतः आन्दोलनों की शुरूआत क्षेत्रीय स्तर पर हुई और कुछ आन्दोलनों ने अखिल भारतीय स्वरूप भी ग्रहण किया।

Note- पुनरूत्थानवादी आन्दोलन का शहरों के साथ-साथ ग्रामीण भारत पर भी प्रभाव पड़ा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR

• सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन भारतीयों के द्वारा आधुनिक विचारों के आधार पर भारतीय समाज को परिवर्तित करने का एक गम्भीर प्रयास था और धीरे-धीरे न केवल समाज एवं धर्म बल्कि राजनीति पर भी इसका प्रभाव दिखा और ऐसा माना जाता है कि वास्तविक अर्थों में आधुनिक भारत की नींव इन सुधारकों ने रखी।

सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन का योगदान

सामाजिक क्षेत्र-

• आधुनिक शिक्षा का विकास एवं आधुनिक विचारों के प्रसार में।
• भारतीय भाषाओं के विकास में।
• महिलाओं के सन्दर्भ में समाज के नजरिये को बदलने में, आगे चलकर न केवल सामाजिक आन्दोलन में बल्कि राजनैतिक आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ती गई।
• भारतीय समाज पुरानी मान्यताओं और रूढ़िवादी परम्पराओं को चुनौती दे सकता है, परिवर्तित कर सकता है इस भाव का लोगों में संचार किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

धार्मिक क्षेत्र में

- धार्मिक कुरीतियों पर प्रहार कर धर्म का सरलीकरण किया।
- धार्मिक सहिष्णुता एवं विविधता में एकता जैसे विचारों को मजबूत बनाया।
- शिक्षा को धार्मिक प्रभाव से पृथक किया।

राजनीतिक योगदान :-

- सुधारकों ने अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप में राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय आन्दोलन को भी प्रभावित किया जैसे आधुनिक विचारों का प्रसार जिसमें राष्ट्रीयता एवं लोकतंत्र जैसे विचार भी थे।
- सामाजिक धार्मिक सुधारों के लिए आलोचनात्मक एवं तर्किक दृष्टिकोण अपनाया और यही दृष्टिकोण ब्रिटिश नीतियों की आलोचना में भी उपयोगी रहा और ब्रिटिश विरोधी भावनाओं के उदय का कारण बना।
- धार्मिक और भाषाई विविधता को स्वीकार कर एकता को प्रोत्साहन।
- प्रेस का कुशलता पूर्वक उपयोग, आगे चलकर राष्ट्रीय आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण हथियार बना।
- दादा भाई नौरोजी, रानाडे जैसे सुधारक प्रत्यक्ष तौर पर राजनीति में भी सक्रिय थे।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

• दयानंद सरस्वती, विवेकानंद इत्यादि सुधारकों ने लोगों में आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव के भाव का संचार किया। और इनका प्रभाव गरमदल एवं क्रान्तिकारी गतिविधियों पर भी दिखा।

सुधार आन्दोलन की सीमाएँ

• मुख्यतः शहरी आन्दोलन।
• सामाजिक दृष्टिकोण से मध्यवर्गीय आन्दोलन।
• अधिकांशतः सुधारकों की सरकार में आस्था।
• सुधारकों के प्रयासों के बावजूद सामाजिक धार्मिक कुरीतियाँ बनी रही।
• पुनरुत्थानवादी सुधारकों की गतिविधियों से धार्मिक टकराव को भी बढ़ावा मिला।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

राष्ट्रीय आन्दोलन / स्वतंत्रता संघर्ष
अवधि - 1857 से 1947

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण :-

राजनीतिक, प्रशासनिक एकीकरण: भारत में राष्ट्रवाद के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण था भारत भर पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक नियंत्रण, एक समान प्रशासनिक आर्थिक ढांचा, एक जैसे कानून इत्यादि। राजनीतिक एकीकरण के साथ-साथ भारत के अलग-अलग क्षेत्रों की जो समस्याएँ थी उसका भी एकीकरण हुआ और पूरे भारत में क्रमशः ब्रिटिश विरोध का एक महत्वपूर्ण आधार बना।

रेलवे की भूमिका: रेलवे के कारण राजनीतिक संगठनों एवं नेताओं के बीच सम्पर्क बढ़ा आम लोगों के बीच भी सम्पर्क बढ़ा, अखबारों का वितरण बढ़ा और इसने समस्याओं के एकीकरण और भारतीयों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन:

- जाति प्रथा एवं छुआ छूत की कठोर शब्दों में आलोचना की इन्होंने भी इसे समाज को विभाजित करने वाला बताया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Trusted Learning Platform KHAN SIR